

॥ ' प्रार्थना ' ॥

हे आदिपुरुष ना.! तू मुझे ऐसा वर दे जो सर्वस्व में तेरा ही दर्शन करूँ। संपूर्ण ब्रह्माण्ड में मैं स्वयं का अनुभव कर सकूँ। अस्तित्व के साथ मिलकर एक हो जाऊँ।

हे आदिपुरुष ना.! सुख तो तूने बहुत दिये हैं पर दया करके ब्रह्माकार वृत्ति भी दे दो। सारे ब्रह्माण्ड में, कण-कण में 24 घंटे तुझे ही देखूँ। तू सर्वज्ञ हुआ है। तू सब जगह फैला हुआ है। ये जो तूने आपार करुणा की है जो मैं हाज़र नाज़र भ. को देख रहा हूँ।

हज़ारों ओर से मुख वाला, पाँव वाला, सिर वाला, हर जगह तेरी ही देह है। हर जगह तेरी ही छवि है। सारा संसार नि. की पवित्र देह है। जड़ होये-चेतन होए, पहाड़ में पहाड़ जैसा, वृक्षों में हरियाली बनकर आया है।

भक्त कहता है सारे ब्रह्माण्ड की शक्ति मेरे तन में प्रकट हो गई है। हे प.! जब तू प्रकट है तो अंश मात्र भी नाम-रूप मेरे अंदर नहीं आ सकता। आज मैं कर्मबंधन से छूट गया हूँ। मेरे सारे कर्म बंधन नाश हो गए हैं। मेरी हस्ती ही नहीं रही। आज से तेरे सिवाय कुछ भी दिखेगा तो मैं लाखों बार माफ़ियाँ लेकर चलूँगा। क्षमा याचना करूँगा।

॥ हरि ओम् ॥

॥ प्रार्थना ॥

हे भगवान! हमें आशीष दो कि हम भटक न जायें। हम बीच से लौट न आयें। हम डगमगा न जायें। हम पथभ्रष्ट न हो जायें। हम अपने मार्ग से चूक न जायें। हम किसी और दिशा में बह न जायें।

हमें आशीष दो कि आप हमारे साथ रहोगे।

हमेशा आपकी छत्रछाया रहेगी। हमेशा आपकी दृष्टि हमारा पीछा करेगी। आप हमारे भीतर मौजूद रहेंगे और देखते रहेंगे कि हम ठीक चल रहे हैं ना। हम चूक तो नहीं रहे। यह भरोसा हमें आ जाये कि आप हमारे साथ खड़े हैं। हम अकेले नहीं हैं, तो हम दूर तक की यात्रा कर लेंगे।

भगवान बुद्ध भी आशीष देते हैं - साधु! साधु! धन्य हो कि साधुता का जन्म हो रहा है। ध्यान की तरफ तुम्हारी दृष्टि जा रही है। साधना में रस पैदा हो रहा है।

साधु-साधु कहकर भ. ने अपने आशीषों की वर्षा की॥

॥ ' प्रार्थना ' ॥

सुबह उठकर आप संकल्प करे जैसे आप सारे ब्रह्माण्ड को सुना रहे हैं-

मैं इस संसार में सबसे ज़्यादा भाग्यशाली आत्मा हूँ।

मैं एक महान् आत्मा हूँ।

मैं सर्वशक्तिवान् हूँ। सर्व में मेरा वास है।

मैं विघ्न विनाशक हूँ। भ. ने मेरे सारे विघ्न हर लिये है।

मैं तनावमुक्त हूँ। मेरा चित्त शांत है।

मैं संतुष्ट मणि हूँ। भ. को पाकर संतुष्ट आ. हो गया हूँ।

मैं इष्ट देवी देवता हूँ।

मैं विजयी रत्न हूँ। सारा विश्व मेरे इस स्वरूप को देख ले।

[' सुबह की प्रार्थना ']

हे भ. ! मैं आपकी गोद से उठ रहा हूँ। आपके मुख से मेरा नया जन्म हुआ है। गुरुमुख से गुरुमुख बनकर, गुरु वचनों से मेरा नया जन्म हुआ है।

हरि ओम्। हरि ओम्। हरि ओम्।

आज के लिए मेरी पूरी संभाल करना। तेलधार व्रत मेरा link आपसे लगा रहे। आपकी पसंदी का बनूँ। फिर-फिर गलती न दोहराऊँ। जड़-चेतन की आशीष पाऊँ। सदा मुस्कुराऊँ। मैं जगत में प्रवेश कर रहा हूँ पर जगत मुझमें प्रवेश न करे।

[' रात की प्रार्थना ']

हे भ. ! आपने सारा दिन मेरी संभाल की, आपका लख-लख शुक्राना। अब मैं आपकी गोद में सो रहा हूँ। मेरी सब परेशानियाँ, रिश्ते नाते, आपके चरणों में अर्पण करता हूँ। आप थपकी लगाकर मुझे सुला देना। पूरी तरह से ख्याल से मुक्त होकर, जगत की प्रलय करके शिव की तरह सोऊँ।

॥ हरि ओम् ॥